# शोध प्रारूप

# खड़िया और मुण्डारी व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन

**पीएच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप की रूपरेखा**

**संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा**

**स्नातकोत्तर खड़िया विभाग,**

**राँची विश्वविद्‍यालय, राँची**

**वर्ष : 2025**


**शोध दिर्नेशक**

डॉ0 किरण कुल्लू
सहायक प्राध्यापिका (खड़िया)
राँची वीमेंस कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्‍यालय राँची।

**शोधार्थी**

वंदना सोरेंग
यू.जी.सी-नेट/जे.आर.एफ
स्नातकोत्तर खड़िया विभाग
राँची विश्वविद्‍यालय, राँची।

**भूमिका**

झारखण्ड एक प्राचीन बहुभाषी प्रदेश है। झारखण्ड में लगभग 32 अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती है जिनमें से खड़िया भी एक प्रमुख जनजाति है जिनकी अपनी एक स्वतंत्र भाषा है। इनका समुदाय भी 'खड़िया' है एवं इनकी भाषा भी 'खड़िया' है। खड़िया शब्द को देवनागरी लिपि में 'खड़िया' एवं रोमन लिपि में 'खरिया' (ज्ञींतपं) लिखा जाता है। खड़िया शब्द की उत्पत्ति के संबंध में खड़िया बुजुर्गों एवं विद्वानों द्वारा कई मत दिए गए हैं। एक मत यह है कि प्राचीन युग में खड़िया जाति पंजाब के खुड़िया परगणा में निवास करने वाली जाति को आर्यों ने खड़िया कहा। दूसरा मत यह है- पटना में खड़िया जाति खाड़ू का काम करती थी, जिसका अर्थ है- बैल की पीठ पर सामान लादकर बैल हाँकना। बैल हाँकने वाली जाति को मुण्डाओं ने खाड़ू कहा। आगे चलकर खाड़ू का परिष्कृत शब्द 'खड़िया' हुआ। कुछ विद्वानों का कहना है कि यह शब्द खड़खड़िया शब्द से बना है। राजाओ और जमींदारों को ढोकर चलने के लिए जो डोलियाँ बनायी जाती थीं, उन्हें 'खड़खड़िया' कहा जाता है। खड़िया लोग इन्हीं डोलियों को ढोया करते थे इसलिए उन्हे खड़िया कहा गया। परंतु कुछ विद्वानों ने इसे सच नहीं माना। खड़िया जाति खड़्खड़िया ढोनेवाली जाति थी, यह सच भी हो सकती है क्योंकि उनकी एक परम्परा इस प्रकार है - कहा जाता है कि पुराने जमाने में खड़िया लोग ही सभी जातियों व समुदायों के लिए पूजा-पाठ का कार्य करते थे और वे ही जनेऊ के एकमात्र अधिकारी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि उस जमाने मे एक ही महापुजारी होता था और उसे ही लोग ढोकर पूजा-स्थलों पर ले जाते थे। एक बार पुण्य (पुनिया) खड़िया को शौच जाने की आवश्यकता हुई। वह डोली से उतरा और उसने अपना जनेऊ उतारकर एक पौधे पर टांग दिया। शौच से लौटते वक्त वह अपना जनेऊ पहनना भूल गया और उसे बिना जनेऊ के ही पूजा-स्थल की ओर ले लिया गया। ढोनेवाले ब्राहमणों को मालूम था कि जनेऊ कहाँ रह गया है, इसलिए कुछ दूर जाने के बाद एक ब्राहमण ने भी शौच जाने का बहाना बनाया। वह शौच जाने के बदले दौड़कर लौटा और जनेऊ को ले लिया। इसके बाद वे आगे बढ़ गए। पूजा-स्थल पहुँचने पर पुण्य खड़िया को मालूम हुआ कि जनेऊ रास्ते में ही छूट गया है। वह उसे ले आने के लिए दौड़ा। वह खाली हाथ ही लौट आया। उसके लौट आने तक वह ब्राहमण उसी पुण्य खड़िया का नाम लेकर पूजा-पाठ प्रारंभ कर चुका था। पुण्य खड़िया ने कहा ''चूँकि तुमने मेरा जनेऊ ले लिया है, इसलिए अब से तुम ही पूजा-पाठ करो और मैं तुम्हें ढोकर चलने वाला बनता हूँ।' उसी दिन से जनेऊ ब्राहमणों के अधिकार में चला गया और खड़िया जाति से पुरोहिती कार्य का अधिकार भी ब्राहमणों के अधिकार में चला गया और खड़िया जाति ब्राहमणों की डोली ढोने लग गयी। कहा जाता है कि आजकल भी अपने पूजा-पाठों में ब्राहमण लोग कुछ खड़िया संतों का नाम लेते हैं तब कहीं उनकी पूजा वैध समझी जाती है। ये सभी कथाएँ या धारणाएँ अथवा किंवदंतियाँ कितना सत्य है यह कहा नहीं जा सकता किन्तु ऐतिहासिक घटना-चक्रों को देखते हुए इसे कुछ हद तक सत्य माना जा सकता है।

फादर अन्तोनी डुंगडुंग खड़िया जनजाति के परिभ्रमण के सम्बन्ध में अलग मत की व्याख्या करते हैं। उनके अनुसार खड़िया छोटानागपुर आने के पूर्व सेन्ट्रल एशिया में अन्य जनजातियों के साथ निवास करते थे। ऐसा लगता है कि अन्य ऑस्ट्रो-एशियाटिक दल के साथ चीन की धरती से होते हुए तिब्बत की ओर से भारत में प्रवेश किया। उन्होंने दो मार्गों की परिकल्पना की है-

1) सेन्ट्रल एशिया, बर्मा, चीन, तिब्बत, हिमालय की तराई, दिल्ली, रोहतासगढ़, अयोध्या, पटना, डाल्टेनगंज, लोहरदगा, बसिया, कोलेबिरा, उड़ीसा, मयूरभंज।

2) सेन्ट्रल एशिया, बर्मा, चीन, तिब्बत, हिमालय की तराई, दिल्ली, रोहतासगढ़, अयोध्या, पटना, डाल्टेनगंज, लोहरदगा, सिसई, बेड़ो, गुमला, जशपुर, बसिया, कोलेबिरा, सिमडेगा, सलंगापोश।

अब खड़िया समुदाय भारत के झारखण्ड राज्य में बसने वाली एक मुख्य जनजाति है। यह दो प्रमुख नदियों- दक्षिणी कोयल और शंख के दोनों किनारों तक तथा ईब और महानदी की तराई पर बसी है। यह उड़ीसा, छत्तीसगढ़, असम तथा मध्यप्रदेश की सीमा क्षेत्रों तक फैली हुई है। इस जनजाति का गढ़ बीरू परगना है जो कि सिमडेगा जिले में है।

भाषा परिवार के अनुसार खड़िया भाषा भारत के आग्नेय/ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा समूह के अंतर्गत आती है। यह ध्वनि प्रधान भाषा है। इनकी भाषा संथाली, मुण्डारी और हो के समीप है। मूल शब्दकोश और उच्चारण में भी काफी समानता पायी जाती है। यही कारण है कि कुछ विद्वानों ने खड़िया समुदाय को मुण्डाओं की उपशाखा माना है।

2011 की जनगणना के अनुसार खड़िया जनजातियों की कुल जनसंख्या पूरे भारत में लगभग 4,33,722 है। अलग-अलग राज्यों की जनसंख्या निम्न है-

| | |
|---|---|
| ओडिशा | - 2,22,844 |
| झारखण्ड | - 1,96,135 |
| छत्तीसगढ़ | - 49,032 |
| बिहार | - 11,569 |
| मध्य प्रदेश | - 2,429 |
| त्रिपुरा | - 1,409 |

मुण्डा जनजातियों की भाषा 'मुण्डारी है। जिसे वे अपनी भाषा में 'होड़ो जगर' कहते हैं। मुण्डारी विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। मुण्डा समुदाय के लोग अपनी भाषा बोलने से नहीं हिचकते हैं। जहाँ कहीं दो या उससे अधिक मुण्डाओं की मुलाकात होती है। वे हर्ष पूर्वक मुण्डारी भाषा बोलने में मशगूल हो जाते हैं। वे अपनी भाषा से प्रेम रखते हैं। मुण्डा अपने समुदाय एवं भाषा के संबंध में हीनता की भावना नहीं रखते हैं। यही कारण है कि मुण्डाओं ने आज भी अपनी भाषा कायम रखी है।

मुण्डारी भाषा विश्व भाषा समुदाय की आग्नेय या आस्ट्रिक भाषा परिवार की प्रमुख भाषा है। यह विश्व भाषा खण्ड के यूरेशिया खण्ड के अंतर्गत आती है। आस्ट्रिक भाषा की दो शाखाएँ हैं- (i) आस्ट्रो-एशियाटिक एवं (ii) आस्ट्रोनेशियन। इसका विस्तार भारत से आस्ट्रेलिया तक है। दक्षिण-पूर्व एशिया की भाषाओं को आस्ट्रोएशियाटिक और प्रायद्वीपीय भाषाओं को आस्ट्रो-नेशियन के अंतर्गत शामिल किया गया है।

संख्या की दृष्टि से संतालों के बाद मुण्डा जनजाति का स्थान है। ये राँची, खूँटी, सिंहभूम, हजारीबाग, सिमडेगा, पलामू, धनबाद, पूर्णिया आदि जिलों में निवास करते हैं। खूँटी और सिंहभूम जिले में इनकी संख्या अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार पूरे भारत में इनकी जनसंख्या लगभग 3,692,000 है। असम में 1,441,000, झारखण्ड - 1,2444,000, ओड़िशा- 565,000, छत्तीसगढ़- 15,000, बिहार- 14,000, मध्प्रदेश- 5,200 तथा अन्य राज्यों में भी इनकी जनसंख्या पायी जाती है।

मुण्डारी भाषा के शब्द सब जगह समान है पर अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के संपर्क में आकर इनके उच्चारण में भिन्नता पायी जाती है। इस दृष्टिकोण से मुण्डारी भाषा को चार भागों में विभाजित किया गया है-

i) हसदः

ii) नागुरी

iii) तमड़िया या लतर

iv) केरः।

अतः जहाँ मानव समाज है वहाँ उसकी भाषा अवश्य होगी। किसी भी मानव समाज में भाषा अहम् भूमिका निभाती है।

प्रेरणाः

स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के दौरान मुझे भाषा-साहित्य के गूढ़ तत्वों को जानने-समझने का मौका मिला। विशेषकर भाषा और साहित्य को परखने का सुअवसर मिला। चूंकि प्रत्येक समुदाय की अपनी स्वतंत्र भाषा एवं साहित्य है जिसमें इनकी परंपरा, संस्कृति एवं अस्तित्व जुड़ा होता है। खड़िया एवं मुण्डारी भाषा परिवार के लोग आदिकाल से कई झुंडों में एक देश से दूसरे देश, एक राज्य से दूसरे राज्य भ्रमण करते रहे, जिसके कारण कई झुंड या समूह अलग-अलग फैलते गए और उनकी भाषाओं में अंतर बढ़ता गया। खड़िया एवं मुण्डारी भाषा दोनों ही आस्ट्रोएशियाटिक या आग्नेय भाषा परिवार से आते हैं।

प्रारंभ में दोनों समुदायों की भाषा एकसमान थी, परन्तु आज उनके बीच काफी असमानतााएँ हैं। इन्हीं सब बातों के कारण मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि क्यों न खड़िया एवं मुण्डारी भाषा पर तुलनात्मक अध्ययन का कार्य किया जाए। इस पर शोध कार्य नहीं हो पाया है। यह विषय समय की मांग के अनुकूल है साथ ही साथ इस विषय पर शोध कार्य करने पर भविष्य के शोधार्थियों एवं अध्ययनकर्त्ताओं के साथ-साथ सामाजिक रूप से भी महत्त्वपूर्ण हो सकेगा।

परिकल्पनाः

किसी शोध समस्या के समाधान हेतु चलने वाली विभिन्न प्रक्रिया के फलस्वरूप ही परिकल्पनाओं का सृजन होता है। किसी भी शोध कार्य मंे परिकल्पना का महत्त्वपूर्ण स्थान रहता है। इसे छोड़कर शोध कार्य को संपन्न नहीं किया जा सकता है। अतः शोध का प्रारंभ एक सुनियोजित ढंग से पूर्ण करने के लिए विषय की पूर्व परिकल्पना होनी चाहिए अर्थात् किसी समस्या के हल के बारे में पहले से अनुमान लगाना ही परिकल्पना है।

खड़िया एवं मुण्डारी आस्ट्रो-एशियाटिक या आग्नेय भाषा परिवार की एक महत्त्वपूर्ण भाषा है जिसके बोलने वालों की संख्या पूरे भारत के कुछ राज्यों को छोड़कर अन्य सभी राज्यों में है। दोनों भाषाओं की अपनी पहचान एवं विशिष्टताएँ है। सभी नैतिक तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन को समाज के सामने प्रस्तुत करना मेरा लक्ष्य है। लोगों के प्रति मेरा विषय प्रेरणादायक बने ऐसा मेरा प्रयास होगा। भाषा हमारी पहचान है, यह हमें हमारे समाज एवं संस्कृति से अवगत कराता है। अतः भाषा को लुप्त होने से बचाया जाए ताकि समाज में एकजुट रहकर भाषा एवं साहित्य को बचाकर रख सके।

**उद्देश्य:**

**प्रस्तावित शोध प्रबंध खड़िया एवं मुण्डारी भाषा-साहित्य एवं संस्कृति के कई पहलुओं को उजागर करेगा-**

1. **खड़िया भाषा के शब्द समूह का मानकीकरण के विषय में जानकारी देना।**
2. **खड़िया भाषा के साहित्य के विकास की परंपरा में सामाजिक सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थितियों को उजागर करना।**
3. **खड़िया भाषा-साहित्य का व्यापक ज्ञान प्राप्त करना तथा इसके एकीकरण, विकास, महत्त्व एवं विशेषताओं को जानना।**
4. **खड़िया भाषा के विकास स्तर की जानकारी देना।**
5. **इसके लेखन एवं प्रकाशन कार्य को बढ़ावा देना।**
6. **खड़िया भाषा के मानक शब्दों , मानक व्याकरण तथा पर्याय शब्दों का निर्माण करना।**
7. **खड़िया एवं मुण्डारी भाषाओं के बीच आपसी प्रेम एवं सौहार्द को बढ़ावा देना।**
8. **खड़िया एवं मुण्डारी भाषाओं के बीच आपसी प्रेम-सौहार्द, सामाजिक, भाषिक एवं सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करना।**

**शोध का महत्व:**

**किसी भी शोध कार्य में शोध का अतुलनीय महत्त्व होता है। शोध कार्य में महत्त्व को छोड़कर इसकी गुणवत्तापूर्ण अध्ययन की कल्पना असंभव सी प्रतीत होती है। शोध कार्य को करने के लिए शोध के महत्त्व को ध्यान में रखकर अध्ययन करना अतिआवश्यक होता है। मेरे शोध का महत्व निम्न है-**

1. **प्रस्तुत शोध प्रबंध 'खड़िया और मुण्डारी भाषा का तुलनात्मक अध्ययन' खड़िया एवं मुण्डारी भाषा-साहित्य को सुनियोजित एवं सुदृढ़ करने में एक महत्त्वपूर्ण योगदान होगा।**
2. **खड़िया भाषा के प्रति समाज के लोगों की जिज्ञासा बढ़ेगी तथा एक-दूसरे को समझने और भाषा प्रेम का विकास होगा। खड़िया और मुण्डारी भाषा के प्रति चेतना बढ़ेगी।**
3. **खड़िया और मुण्डारी भाषा साहित्य के सृजन के प्रति लोगों का रूझान बढ़ेगा।**

4. खड़िया भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन बढ़ेगा।

5. प्रस्तुत शोध से खड़िया और मुण्डारी भाषा साहित्य के द्वारा समाज के व्यवहारिक जीवन में उत्तरोत्तर विकास होगा।

6. खड़िया भाषा के सामान्य शब्द पर्याय से भाषा समृद्ध होगा।

**शोध विधि:**

शोध कार्य में शोध विधि का होना अतिआवश्यक है। शोध विधि किसी भी शोध को दिशा-निर्देश प्रदान करता है। विधि का निर्धारण शोध समस्या तथा उसके उद्देश्य पर आधारित होता है। अच्छी शोध के लिए क्षेत्र का भ्रमण कर उसपर अमल किया जाता है या उस विषय से संबंधित जानकारी रखने वाले विद्वानों से सलाह या सहायता लिया जाता है। अतः इस शोध प्रबंध को पूरा करने के लिए निम्न शोध विधियों का अनुसरण करना समीचीन होगा-

1. तुलनात्मक विधि
2. विश्लेषणात्मक विधि
3. साक्षात्कार विधि
4. वैयक्तिक अध्ययन
5. अवलोकन विधि

**शोध उपकरण:**

शोध कार्य के योजनाओं को पूर्ण रूप देने के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है-

1. लेखन सामग्री
2. इंटरनेट
3. कम्प्यूटर
4. मोबाइल रिकॉर्डर
5. कैमरा
6. मानचित्र
7. पेपर इत्यादि।

**पूर्व शोध कार्यों का विवरण:**

खड़िया एवं मुण्डा समुदाय के अस्तित्व की रक्षा के लिए भाषा संस्कृति एवं इसके समग्र साहित्य की जानकारी अतिआवश्यक है। खड़िया और मुण्डा समुदाय के जीवन मूल्य, विशेषताएँ एवं जीवन-शैली में रूचि जगाना वर्तमान संदर्भ में अपेक्षित है। खड़िया होने का गौरव प्रदान करना, गैर-खड़ियाओं को खड़िया समुदाय के जीवन मूल्यों, विशेषताओं एवं जीवन-शैली से अवगत कराना वर्त्तमान युग में आवश्यक है। ''खड़िया और मुण्डारी भाषा का तुलनात्मक

अध्ययन’ ’ विषय पर अबतक किसी ने शोध कार्य नहीं किया है। इसपर अनुसंधान होने से खड़िया और मुण्डारी भाषा साहित्य व्याकरणिक स्वरूप एवं लिपि से हो सकेगा। खड़िया और मुण्डारी भाषा के अन्य विधाओं पर निम्न शोध कार्य संपन्न हो चुके हैं-

1. डॉ0 मथियस डुंगडुंग, एस0 जे0 - हिन्दी और खड़िया (तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन)।

2. फा0 जोबाकिम डुंगडुंग, ये से0 - खड़िया, मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।

3. जुलियुस बाअः - खड़िया डाऽ (संस्कृति)।

4. पौलुस कुल्लू, एस0जे0 - खड़िया धर्म और संस्कृति का विश्लेषण।

5. डॉ0 रोज केरकेट्टा - खड़िया लोककथाओं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।

6. डॉ0 मेरी एस0 सोरेंग - खड़िया साहित्य मंे जुलियुस बाः का योगदान।

7. डॉ0 इग्नासिया टोप्पो - खड़िया लोकगीतः साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन।

8. डॉ0 चन्द्र किशोर केरकेट्टा - खड़िया साहित्य में जीवन दर्शन की परम्पराएँ: एक अध्ययन।

9. डॉ0 अनिल वीरेन्द्र कुल्लू - खड़िया साहित्य का इतिहास।

10. डॉ0 किरण कुल्लू - खड़िया शिष्ट साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

11. डॉ0 रजनी संगीता किड़ो - खड़िया भाषाः परिचय एवं प्रयोग।

12. डॉ0 मीराकल टेटे - खड़िया मुहावरे एवं कहावतों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन

13. डॉ0 लोरेंग टेटे - खड़िया लोकगीतों में प्रकृति चित्रण

14. डॉ0 तरकेलेंग कुल्लू - राष्ट्रीय बालिका प्रारंभिक शिक्षा कार्यक्रम में मातृभाषा की भूमिका: सिमडेगा जिला के संदर्भ में

# शोध प्रारूप

# खड़िया और मुण्डारी व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन

**अध्यायीकरण**

**प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है-**

**अध्याय-1: खड़िया एवं मुण्डारी भाषा का सामान्य परिचय**

1.1 **परिचय**

1.2 **नामकरण**

1.3 **उद्भव और विकास**

**अध्याय-2: व्याकरण का स्वरूप और विकास**

2.1 **व्याकरण का अर्थ और परिभाषा**

2.2 **व्याकरण के उपकरण**

2.3 **खड़िया व्याकरण का विकास**

2.4 **मुण्डारी व्याकरण का विकास**

**अध्याय-3: खड़िया एवं मुण्डारी भाषा का वर्ण-विचार**

3.1 **स्वर वर्ण**

3.2 **व्यंजन वर्ण**

**अध्याय-4: खड़िया एवं मुण्डारी भाषा में शब्द प्रयोग (विचार)**

**भाग (क)**

- **संज्ञा**
- **सर्वनाम**
- **विशेषण**

- क्रिया
- क्रिया विशेषण

**भाग (ख)**

- लिंग
- वचन
- काल
- कारक
- अव्यय

**अध्याय-5: खड़िया एवं मुण्डारी मंे उपसर्ग, प्रत्यय, संधि और समास**

5.1 **उपसर्ग और उसके प्रयोग**

5.2 **प्रत्यय और उसके प्रयोग**

5.3 **संधि और उसके भेद**

5.4 **समास और उसके भेद**

**अध्याय-6: खड़िया एवं मुण्डारी में अर्थ-विन्यास**

6.1 **पर्यायवाची शब्द**

6.2 **विलोम शब्द**

6.3 **श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द**

6.4 **अनेक शब्दों**

**अध्याय-7: खड़िया एवं मुण्डारी का वाक्य विचार**

7.1 **वाक्य की परिभाषा**

7.2 **वाक्य के भेद**

7.3 **रचना के आधार पर**

7.4 **अर्थ के आधार पर**

**निष्कर्ष**

**परिशिष्ट**

- **आधार ग्रंथों की सूची**
- **संदर्भ ग्रंथों की सूची**
- **पत्र-पत्रिकाओं की सूची**
- **साक्षात्कार की सूची**
- **चित्रावली**

**नोट: आवश्यकता होने पर शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किए जा सकते हैं।**


**शोध दिर्नेशक**

**डॉ0 किरण कुल्लू**
**सहायक प्राध्यापिका (खड़िया)**
**राँची वीमेंस कॉलेज, राँची**
**राँची विश्वविद्यालय राँची।**

**शोधार्थी**

**वंदना सोरेंग**
**यू.जी.सी-नेट/जे.आर.एफ**
**स्नातकोत्तर खड़िया विभाग**
**राँची विश्वविद्यालय, राँची।**

## आधार ग्रंथ सूची


1. **कुल्लू, पौलुस ये0स0, खड़िया व्याकरण और संक्षिप्त शब्दकोश, धार्मिक साहित्य समिति, राँची**, 1981

2. **गुरू, कामता प्रसाद, हिन्दी व्याकरण, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली**, 2015

3. **टेटे, डॉ0 फा0 निकोलस, खड़िया शब्द संग्रह**, 2010

4. **डुंगडुंग, डॉ0 मथियस एस0 जे0, हिन्दी और खड़िया तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन, सत्य भारती, राँची, प्र0सं0**-1986, **द्वि0सं0**-2013

5. **प्रसाद, डॉ0 वासुदेव नंदन, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना, भारती भवन, पटना**, 1993

6. **बाअः, जुलियुस, खड़िया ध्वनिशास्त्र, कैथोलिक प्रेस, राँची**, 1983

7. **बड़ायऊद, डॉ0 मनसिद्ध, नवा होड़ो जगर मुंडि, नेशनल प्रिंटर्स, राँची नवम् सं**.- 2022

8. **मुण्डा, डॉ0 रामदयाल, मुण्डारी व्याकरण, छोटानागपुरप्रकाशन केन्द्र, राँची** 1988

9. **मुण्डू, डॉ0 मनमसीह, मुण्डारी टुङकोढारी, काथलिक प्रेस राँची**, 1995

10. **साहू, डॉ0 आर0 पी0, खड़िया व्याकरण, राँची**, 1979

## संदर्भ ग्रंथ सूची

### (खड़िया)


1. किड़ो, रजनी संगीता, खड़िया भाषाः परिचय एवं प्रयोग, शोध प्रबंध जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची, 2010

2. कुल्लू, फ्रांसिस, सेंड़े' ज खड़िया गामसो' (खड़िया व्याकरण), माँ गायत्री प्रिंटर्स, सिमडेगा, 2022

3. कुल्लू, डॉ0 किरण, खड़िया शिष्ट साहित्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृथ्वी प्रकाशन 126, विद्या विहार रोहतक रोड, न्यू दिल्ली, प्र0सं0 2018

4. बाअः जुलियुस, खड़िया ध्वनि संरचना का वैज्ञानिक विश्लेषण, 2001

5. साहु, डॉ0 आर0पी0, खड़िया व्याकरण, राँची, 1979


### (मुण्डारी)


1. डॉ0 रूपांशुमाला, मुण्डा आदिवासियों की भाषाएँ और उनकी संस्कृति, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002

2. प्रसाद, डॉ0 दिनेश्वर, मुण्डारी शब्दावली, अखिल भारतीय सन्दर्भ किशोर विद्या निकेतन-1, 1999

3. प्रसाद, श्रीमती स्वर्णलता, हिन्दी मुण्डारी शब्दकोश, बिहार सरकार, कल्याण एवं वन विभाग जनजातीय शोध संस्थान राँची 1973

4. फा0 पी0पोनेट एस0 जे0, दि मुण्डा वर्ल्ड, काथलिक प्रेस, राँची 1978

5. फा0 पी0 पोनेट एस0जे0, हड़म कोअः कजिको (मुण्डा कहावतें और लोकोक्तियाँ), काथलिक प्रेस, राँची 1988


### (हिन्दी)


1. चतुर्वेदी, शिवनारायण, सिंह, तुमन, हिन्दी शब्द सामर्थ्य, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली, 2001

2. तरूण, डॉ0 हरिवंश, मानक हिन्दी व्याकरण और रचना, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2002

3. **तिवारी**, डॉ0 **भोलानाथ**, **भाषा विज्ञान**, **किताब महल**, **सरोजिनी नायडू मार्ग**, **इलाहाबाद**, 2010

4. **बाहरी**, डॉ0 **हरदेव**, **हिन्दी शब्द-अर्थ-प्रयोग**, **अभिव्यक्ति प्रकाशन**, **गोविन्दपुर कॉलोनी**, **इलाहाबाद**, 2001

5. **शर्मा**, **रामकिशोर**, **भाषा विज्ञान हिन्दी भाषा और लिपि**, **लोकभारती प्रकाशन**, **इलाहाबाद**, 2007